

और यह तभी मिलेगी जब हम श्रम में जाकर किसी उच्च कोटि के मेवता सात को साप्ताहिक उतका सांग प्राप्त करेंगे। रोटी, कपडा, कान, में जीवन में मूलभूत वषयकताएं हैं परन्तु क्या हमें वापन न हमें कलम इसी के लिये वन दिया है इसकी पूर्ति तो भूख वन पर चींटी से लेकर हाथी तक भी प्रयास करते हैं तो क्या हमें भी ती तक जीवन सीमित कर देना हिये। प? लिखकर नौकरी मिलने कहते हैं कैरीयर बन गया परन्तु बल इतने को ही जीवन का आंतिम श्य नहीं मान लेना चाहिये। जीवन ता है हमें अपने कल्याण के लिये म आनन्द के लिये संतो का जीवन बल लोक कल्याण के लिये होता है।